बांग्लादेश अभ्युदय के पश्चात भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध

डॉ0 अमितेन्द्र प्रताप सिंह

दक्षिण एशियाई क्षेत्र का नेतृत्व करने वाले देशों में भारत और पाकिस्तान प्रमुख देश है। भारत और पाकिस्तान पड़ोसी देश भी है। दोनों के मध्य ऐतिहासिक समानता, सांस्कृतिक एकरूपता, भौगोलिक सामीप्य, आर्थिक अन्तः निर्भरता के बावजूद मित्रता के बजाय दूर पड़ोसियों वाले सम्बन्ध बने रहे है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से आजतक इनके सम्बन्ध स्पर्धा, संघर्ष एवं युद्ध के दायरे से बाहर नहीं निकले है। इनके सम्बन्ध संघर्ष से शान्ति, फिर संघर्ष, फिर शान्ति की ओर अग्रसर हुए है परन्तु मित्रता व सहयोग से परे रहे है। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों की यदि समीक्षा करे तो ज्ञात होगा कि इनके मध्य लगातार शीतयुद्ध व चार बार वास्तविक युद्ध हो चुका है। दोनों के मध्य काफी अल्प समयान्तराल तक तनाव शैथिल्य या मधुर सम्बन्धों का काल रहा है।

12 अप्रैल 1971 को पूर्वी पाकिस्तान ने अपने को स्वाधीन घोषित कर दिया। विशाल संख्या में शरणार्थी सीमा पर से भारत आने लगे। इस पूर्वी पाकिस्तान ने बांग्लादेश के नाम से विश्व मानचित्र पर अपनी जगह बना ली। 17 अप्रैल, 1971 को बांग्लादेश में विधिवत गणराज्य की घोषणा कर दी गयी। विभिन्न दबावों के बावजूद भारत ने बांग्लादेश के मान्यता के प्रश्न पर संयम का परिचय दिया। पाकिस्तान ने (पश्चिमी पाकिस्तान) इन सभी घटनाओं का दोषी भारत को ठहराया। बांग्लादेश में हो रहे नरसंहार, शरणार्थियों की बाढ़ बांग्लादेश की मान्यता सम्बन्धी प्रश्न, पाकिस्तान द्वारा दी जा रही धमकियां, पाश्चात्य देशों एवं चीन का भारत विरोधी दृष्टिकोण के मद्देनजर, 9 अगस्त 1971 को भारत ने ''भारत–सोवियत मैत्री एवं सहयोग'' सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये ताकि आकस्मिक युद्ध की आशंका से निपटा जा सके।